February 2015

TODAY

(NEWSLETTER OF EURASIA REIYUKAI)

Year : 3, Vol. 20 www.eurasiareiyukai.com

क्षमा मांगने का कार्यजारी रखें।
इसमें पैसेभी नहीं लगते और घर में शांति भी रहती है।
-युशुन मासुनागा (संस्थापक अध्यक्ष)

महागुरू किमी कोतानी जी का ४५ वां पुण्यतिथि स्मरण समारोह ९ फरवरी २०१५ को सम्पूर्ण मिहाता शाखा एवं समाज विकास केन्द्रों में आयोजित किये जाने के कारण अपने सदस्यों के साथ-साथ अपनी मिहाता शाखा एवं नजदीकी समाज विकास केन्द्र में सहभागी होकर महागुरूजी के प्रति गुण लौटायें।

२४ फरवरी २०१५ के दिन हमारे गुरू आन् च्यू ग्यो तोकु जेन शी जी का ११वां पुण्यतिथि स्मरण समारोह सम्पूर्ण मिहाता शाखा एवं समाज विकास केन्द्रों में आयोजित होने के कारण अपने सदस्यों के साथ-साथ अपनी मिहाता शाखा एवं अपने नजदीकी समाज विकास केन्द्र में सहभागी होकर हमारे गुरूजी के प्रति गुण लौटायें।

यूराशिया रेयूकाई १६वीं शाखा के मुख्य हॉल का उद्घाटन संपन्न

३१ जनवरी २०१५, शनिवार को यूराशिया रेयूकाई १६वीं शाखा के मुख्य हॉल का उद्घाटन सानेपा ललितपुर में समारोहपूर्वक यूराशिया रेयूकाई के संस्थापक अध्यक्ष जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। उक्त समारोह में मुमा हिरोको मासुनागा जी भी उपस्थित थीं।

उक्त समारोह में संस्थापक अध्यक्षजी द्वारा प्रदान किये गये मार्गनिर्देशन का सारांश

कर्म के सम्बन्धों के आश्चर्य को जानना होगा, हम क्यों मानव के रूप में जन्म लेकर आये हैं ? अवश्य ही हमारी जिम्मेवारियां और कर्तव्य हैं। आज विभिन्न समस्याओं से युक्त इस बुरे संसार को बचाने के लिए मनुष्य के रूप में जन्म लेने के प्रति गौरव करना होगा और कृतज्ञ होना पड़ेगा। आज केसमय अपनी आवश्यकता रहने के कारण हम जन्म लेकर आये हैं। स्वयं मनुष्य के रूप में लेकर आयी जिम्मेवारी एवं कर्तव्यों को पूरा नहीं करने से नहीं होगा। केवल मनुष्य ही धन्यवाद, क्षमा करेंगे, कह सकता है और मुस्कान कर सकता है। मिचिबिकी होने का मौका प्राप्त करें - ऐसा कहने वाले इस समय में बच रहे लोगों के मन व आत्मा में बोधिसत्व की भावना जगाकर दया की भावनायुक्त व्यक्ति बनाने के लिए हैं। व्यक्ति-व्यक्ति में संपर्क बनाकर परस्पर अस्तित्व के प्रति विश्वास कर, आपस में हंसी-खुशी विखेरते हुए मिलन का आयोजन करना पड़ेगा। मनुष्य अकेले बच नहीं सकता, मिचिबिकी द्वारा विश्वशांति का निर्माण करते जाना है। हम परस्पर कर्म के सम्बन्धों के कारण ही मुलाकात होने का मौका प्राप्त किये हैं। इस मुलाकात होने का मौका प्राप्त होने के प्रति कृतज्ञ होना पड़ेगा।

मुस्कान से औरों के मन का दरवाजा खोल सकते हैं। मन को लेने का तरीका परिवर्त्तित करना पड़ेगा स्यवं महसूस नहीं होने वाली क्षमता का पता लगा सकते हैं, ऐसा आत्मविश्वास लेना पड़ेगा। आत्मा की सुन्दरता को और अधिक सुन्दर बनायें। अपने कार्यों के अनुरूप परिवर्तन होता जाता है। अपनी माता, पिता, पूर्वजों को खोज कर प्राप्त नहीं किया जाता बल्कि कर्म का सम्बन्ध होने के कारण जीवन प्राप्त करने का मौका प्राप्त हुआ है। अपने पूर्वजों को खुशहाल बनाने केकार्य स्वयं करने केमौके प्राप्त करने पड़ेंगे।

अपने में रहने वाली प्रतिभा-क्षमता को निकाल कर, शक्ति लगाकर स्वयं क्रियाशील होकर, कार्यान्वयन कर, कार्यान्वयन कराकर परिणाम दिखाते जाना पड़ेगा।

यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र भारत एवं नेपाल के संयोजकों की बैठकें सम्पन्न

५ जनवरी २०१५ को नेपाल के समाज विकास केन्द्र के संयोजकों की बैठक यूराशिया रेयूकाई नेपाल, सानेपा में एवं १२ जनवरी २०१५ को भारत के समाज विकास केन्द्र के संयोजकों की बैठक सिलीगुड़ी भारत में यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। उक्त बैठकों में संयोजकों ने अपने-अपने समाज विकास केन्द्र द्वारा सम्पन्न करने का मौका प्राप्त किये वार्षिक क्रियाकलापों के प्रतिवेदन एवं भावी कार्ययोजनाओं सहित प्रतिज्ञा की घोषणा की। इन बैठकों में संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा सहभागियों को मार्गनिर्देशन प्रदान किये गये।

भव्य मिलनों का आयोजन संपन्न

यूराशिया रेयूकाई २१वीं शाखा का भव्य मिलन समारोह ११ जनवरी २०१५ को भारत के सिलीगुड़ी में एवं यूराशिया रेयूकाई १८वीं शाखा का भव्य मिलन समारोह १८ जनवरी २०१५ को भारत के कालिम्पोंग में यूराशिया रेयूकाई एवं अपनी-अपनी शाखाओं की मिहाता विराजमान कराकर यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष दंपती की उपस्थिति में सम्पन्न हुए।

भारत का ६६वां गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित

२६ जनवरी २०१५ (सोमवार) को यूराशिया रेयूकाई के तत्वावधान में भारत का ६६वां गणतंत्र दिवस समारोह भव्यतापूर्वक संपन्न हुआ। समारोह का शुभारंभ यूराशिया रेयूकाई प्रधान कार्यालय के प्रांगण में राष्ट्रीय ध्वज उत्तोलन कर सम्पन्न हुआ। यह गणतंत्र दिवस समारोह भारत के सम्पूर्ण समाज विकास केन्द्रों में भी आयोजित किये गये।

जापानी भाषा कक्षा प्रारंभ

यूराशिया रेयूकाई के आयोजन में यूराशिया रेयूकाई १८वीं शाखा मुख्य हॉल कालिम्पोंग में १५ जनवरी २०१५ से मासुनागा जापानी भाषा कक्षा प्रारंभ हुई है। मासुनागा जापानी भाषा अध्ययन में अभिरूचि रखने वाले यूराशिया रेयूकाई के सदस्य एवं साधारण व्यक्ति, सभी उक्त कक्षा में प्रवेश ले सकते हैं, ऐसी जानकारी पत्रिका के माध्यम से दी जा रही है।

Global Warming (जलवायु परिवर्तन)

जलवायु परिवर्तन का मतलब क्या है ?

हमारी निवास करने वाली पृथ्वी क्रमशः गर्म हो रही है। ऐसा सूर्य के तापक्रम के बढ़ने के कारण न होकर, पृथ्वी पर ही मानवीय कारणों से सृजित हो रहा है। मानव जाति अपने बचने वाले संसार को प्रदूषित करने के क्रियाकलापों में लिप्त है। पृथ्वी के तापक्रम में हो रही क्रमशः वृद्धि और उसके कारण से पड़ रहे प्रभावों को ही जलवायु परिवर्तन कहते हैं।

उद्योग, कल-कारखानों, यातायात के साधन, विभिन्न मशीनों आदि के अत्यधिक प्रयोग के कारण पेट्रोल, डीजल, किरासन तेल जैसे इंधन तथा मिथेन गैस जलाने से कार्बन, कार्बन मोनोक्साइड आदि विषैले व हानिकारक गैसों की मात्रा वातावरण में बढ़ते जाने के कारण जलवायु परिवर्तन जैसी डरावनी स्थिति पैदा हुई है। कल-कारखानों से निकलने वाली च २.५ से स्थिति और भयानक हो गयी है। ऐसे वातावरण में श्वास लेने तक की स्थिति नहीं रह गयी है।

पृथ्वी के सतह के गर्म होने का मतलब समुद्र का भी गर्म होना है। पृथ्वी के बढ़ते तापक्रम के साथ ही हिम-श्रृंखलाओं के पिघलने की स्थिति है, जिससे समुद्र का पानी उपर उठ रहा है और जमीन पानी में डूबने लगी है। समय पर वर्षा का नहीं होना, बर्फ गिरने वाले स्थान पर बर्फ के बदले में पानी बरसना। जहां मच्छर नहीं लगते, अब मच्छर लगते हैं। हिम नदियां धीरे-धीरे लुप्त हो रही है, वन्य-जंतुओं का विनाश हो रहा है, खाद्य-संकट बढ़ रहा है, कृषि-भूमि मरूभूमि में बदलती जा रही है, बाढ़-भूस्खलन, आंधी-तूफान तथा बड़ा सूखा (अकाल) की स्थिति बन रही है। ऐसे में विभिन्न प्रकार की छुआ-छूत अन्य और बीमारियां फैलती हैं। ऐसे में कभी भी पृथ्वी का बड़ा विनाश होना संभव है और पृथ्वी का अस्तित्व ही समाप्त हो सकता है।

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी ने मार्गनिर्देशन में कहा है कि "पूर्वजों से प्राप्त प्राकृतिक जगत को और सुन्दर बनाकर, भावी पीढ़ी को एक सुन्दर भविष्य हस्तांतरित करना पड़ेगा।" आइए ! इस मार्गनिर्देशन के अनुरूप हम अपने विश्व को एकजुट होकर बचायें।

यूराशिया रेयूकाई की अपील :

१) वन-जंगलों का विनाश न करें, वृक्षारोपण करें।

२) हरित गैस (ग्रीन गैस) का उत्सर्जन कम से कम करें।

३) जलवायु से होने वाले प्रभावों के प्रति समाज में जनचेतना जागृत करें।

४) प्रकृति व पर्यावरण को बचाने का कार्य कर हम अपने विश्व को स्वयं बचायें।

५) जहां-तहां कूड़ा-कचरा न फेंके।

६) नहीं सड़ने-गलने वाले कचरों को जमा कर रि-साइकिलिंग कर उनका पुनः प्रयोग करें। प्लास्टिक का प्रयोग यथासंभवन न करें।

७) कृषि में रासायनिक खाद व विष आदि का प्रयोग कम से कम करने के लिए जैविक खाद का प्रयोग करें।

८) कार्बन डाईआक्साइड सहित विभिन्न ग्रीन गैसों के उत्पादन में कमी लायें।

९) बिजली के सॉकेट में अनावश्यक प्लग लगाये रखने की आदत न डालें।

१०) पुराने वाहनों को विस्थापित करते जायें। यथासंभव चलने की आदत डालकर वाहनों के प्रयोग को कम करें।

११) बिजली से रोशनी के लिए सीएफएल/ा एलईडी बल्बों का प्रयोग करें।

१२) घरों में प्रयोग आने वाली बिजली, गैस, कोयला व तेल के प्रयोग में मितव्ययिता अपनायें।

१३) बिजली के उपकरओं को उपयोग के बाद पूर्ण रूप से बंद कर दें।